# समकालीन कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श

**कु. भाग्यश्री दादासाहेब चिखलीकर**
पीएच.डी शोध छात्रा
शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर
दूरभाष: 8379962817

**सारांश:**

समकालीन कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श एक कमजोर स्थिति में है। उसके कारण बहुत स्पष्ट है। आदिवासी विमर्श करने के लिए आदिवासियों के बारे में जानना बहुत जरुरी है। और आदिवासियों के बारे में जानने के लिए उनके बीच जाना बहुत जरुरी है।

**'देहरी की खातिर':** इस कहानी में 'मेहरून्निसा परवेज' ने इस कहानी में आदिवासी स्त्रियों का शोषित रूप को ही चित्रित किया है। आदिवासी स्त्रियों की शोषित रूप को ही चित्रित किया है। अपितु उससे एक कदम आगे जाकर उन्होंने आदिवासी स्त्रियों में विरोध करने की क्षमता को भी व्यक्त किया है।

**'अपराध' :-** यही कहानी 'संजीव' द्वारा लिखित जो की उनकी श्रेष्ठ कहानियों में से एक है, नक्सलवादी आन्दोलन की पृष्ठभूमी पर लिखी गयी है।

**'औरत':** औरत नामक कहानी के माध्यम से संजीव आदिवासी समाज के साथ-साथ उन शोषनकारी आततईयों को भी आदिवासी संघर्ष के इतिहास में बताते है। संजीव के लिए विरोध और प्रतिरोध करनेवाली औरत ही दुनिया की सबसे हसीन औरत है।

**बीज शब्द-** विमर्श, शोषण, अत्याचार, नारी आदिवासी, जनजाति, रूढी-परंपरा

**प्रस्तावना:**

जनजातीय पंचायतों के सशक्तिकरण के लिए कई कार्य स्वयंसेवी संघठनो को करने होंगे। समाज में पायी जानेवाली कुरीतियों व गुरबाजी को दूर करना होगा तथा आदिवासियों को विश्वास में लेकर सुधार के रास्ते मिल जुलकर तय करने होंगे। स्वयंसेवी संघठनो के कार्यकर्ताओ को अधिकांश समय समाज के मध्य बिताकर विकास में बाधक तत्वों, करणों व उनके निदान पर चर्चा करनी होगी। छोटे स्तर पर नीति निर्माण से लेकर नीति के क्रियान्वयन में आदिवासियों कि सहभागिता को बढाना होगा ताकि विकास की इच्छा समुदाय के ह्दय में कार्यरत संघठनो को आपसी सामंजस्य बढ़ाना होगा। और अपने संसाधनो तथा ज्ञान का आदान-प्रदान करके हुए मिलकर क्षेत्र के विकास के लिए जुटना होगा।

आदिवासी समाज की अपनी एक अलग संस्कृति एवं पहचान रही है। लेकिन हमने उनका उपयोग केवल कला के रूप में ही अधिक किया है, बल्कि पहचान के रूप में कम इसलिए आज बाजारीकरण के दौर में आदिवासियों के जीवन और अस्मिता को बचाना आवश्यक हो गया है। मुलत : आदिवासी जंगल के दावेदार होकर भी उन्हें जंगलो से खदेडने का प्रयास किया जा रहा है। विकास के नाम पर शासन एवं उद्योगपंतियों द्वारा भूमि अधिग्रहण करके उनकी जमीनें एवं कोयला खदानोंपूर जबरदस्ती से अधिकार जमाया जा रहा है। आज हम 21 वी सदी में पहुँचकर भी हमारे देश का आदिवासी समाज अपने विकास कोसों दूर है। इसलिए आज आदिवासियों के सामने विस्थापन कि भयंकर समस्या उत्पन्न हो रही है सरकार की उदासीन नीतियों के कारण आदिवासियों की स्थिति बिकट बनी हुई है। विकास के नाम पर आदिवासी पलायन और विस्थापन आदि समस्याओं पर आज विचार विमर्श होना आवश्यक है।

आदिवासियों कि समस्याएँ बहुत कठिन है। और उनके रिति-रिवाज, रहन-सहन, सभ्यता, आचार-विचार, संस्कृति, धर्म ललित कला आदि में सुधार कि जरुरत है। सभ्य समाज से सम्पर्क में आने के कारण उनके सामने अनेक समस्याएँ खड़ी हो गई है। बाहरी संस्कृति के सम्पर्क में आने के कारण वे अपनी संस्कृति का त्याग करते जा रहे हैं। विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों तथा आरक्षण के बाद भी आदिवासी समाज का एक बड़ा भाग सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछडा ही रह गया। अब ऐसे प्रयास किए जाने चाहिये जो जनसामान्य तक पहुँच सके, जिससे इनका विकास हो सके।

**1) मेहरुन्निसा परवेज-** ने आदिवासी स्त्रियों के शोषित रूप को ही चित्रित नहीं किया है अपितु उससे एक कदम आगे जाकर उन्होने आदिवासी स्त्रियों में विरोध करने की क्षमता को भी व्यक्त किया है। आदिवासी समाज की स्त्रियों अपने ऊपर हो रहे शोषण अत्याचार को अपनी नियति नही समझ कर नहीं बैठ जाती है देहरी की खातिर में जब पापा को घर से निकाल देते हैं। तब गाँव की

एक काकी उसे अपने घर आश्रय देती है। चूँकि वह माँ बनने वाली थी। काका-काकी उसे बहुत स्नेह और दुलार से अपने पास रखते हैं। बच्चे के जन्म के बाद काकी हो उसके और बच्चे का ख्याल रखती हैं। लेकिन काका कि नीयत में खोट आ जाता है। वह बेटी जैसी लडकी को अपने हवस का शिकार बनाना चाहता है। काकी सही समय पर पर पहुँचकर उसे बचा लेती हैं। एक लडकी की अस्मिता को बचाये रखने के काकी टॅगिया से अपने ही पति खून कर देती है। सुकी बयडी में थोरा का पति जब दुसरी औरत को घर परलाता है लेकिन थोरा अपने पत्नी होने के अधिकार को छोडने के लिए तैयार नहीं है। वह अपनी पति का विरोध करती है.... जा, चले जा कोठरी में खाली नी करूँ। म्हारे बापू ने ब्याह कराया हैं फेरे लेकर लाया है। ब्याहवाली हुँ। म्हारी इज्जत है। इसप्रकार आदिवासी स्त्रियाँ भी अपनी अस्मिता और अधिकारों के लिए आवाज उठा रही है।

**2) संजीव द्वारा लिखित 'अपराध' कहानी** जो कि उनकी श्रेष्ठ कहानियों में से एक है, नक्सलवादी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है।संजीव के प्रिय सूर्यनारायण शर्मा को नक्सलवादी आन्दोलन में शामिल होने के 'अपराध' में पुलिस ने हजारीबाग जेल में बंदूक की नालों से कोंच-कोंच कर मार डाला था। इसी के चलते वे 'अपराध' कहानी लिख पाते है। संजीव ने इस कहानी में प्रशासन पुलिस, न्यायपालिका, राजनेताओं सब पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। अपराध कहानी के नायकसचिन (बुलबुल) को जब सजा दि जाती है तो उससे बचाव के लिए बोलने को कहा जाता है तब वह कहता है 'मुझे इस पुजीवादी, प्रतिक्रियावादी न्यायव्यवस्था में विश्वास नहीं है। आम जनता भी जिसे न्याय का मंदिर कहती है वह लुटेरे-पंगे और जुता-चोरो से भरा पडा है। ये लाल थाने, लाल जेलखाने और लाल कचाहरियाँ इनपर कितने बेकसुरों का खून पुता हैं, वकीलों और जजों का काला गाऊन न जाने कितने खून के धब्बों को छुपाए हुए हैं। परिवर्तन के महान रास्ते में एक मुकाम भी आएगा। जिस दिन इन्हें अपना चरित्र बदलना होगा वरना इनकी रोबिली बुलन्दियाँ धुल- चाहती नजर आएगी। कहानी में बताया हैं कि सत्ता और व्यवस्था समाज के तमाम विरोधियों व अपराधियों को संघर्ष और विरोध के माध्यम से हराया जा सकता है। भले ही उसके लिए से समांतर सत्ता और व्यवस्था की स्थापना हि क्यो नहीं करनी पडे। संजीव मानते हैं कि आदिवासी किसान, मजदूर व नारी द्वारा सामंतवाद, पुँजीवादी के फैलते वर्चस्व का हिंसात्मक विद्रोह और संघर्ष ही नक्सलवादी आन्दोलन है।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और बाजारीकरण के दौर में आदिवासी पर हो रहे अत्याचारों का वे विरोध कर रहे हैं संघठीत होकर लेकिन पुलिस के माध्यम से शोषणकारी व्यवस्था उन्हें कुचलने पर आमदा है। आदिवासी समाज का शोषण और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष और विद्रोह कि परम्परा का लम्बा इतिहास रहा है। पहले आर्यो के खिलाफ संघर्ष किया है तो फिर मुगलों के साथ फिर बाद में अंग्रेजों, सामंतो, जमीनदारों के साथ संघर्ष किया वर्तमान दौर में ग्लोबल गाँव के देवताओं हाहा, बिडला, अम्बानी पास्को वेदान्ता आदि के साथ संघर्ष कर रहे हैं।

**3)** आदिवासी समाज के इसी संघर्ष के इतिहास को याद दिलाती है। दुनिया को सबसे हसीन, **'औरत' नामक कहानी।** इस कहानी के माध्यम से संजीव आदिवासी समाज के साथ-साथ उन शोषणकारी आंततार्इयों को भी आदिवासी संघर्ष के इतिहास में बताते हैं। संजीव के लिए विरोध और प्रतिरोध करनेवाली औरत ही दुनिया की सबसे हसीन औरत है। प्रेमचन्द्र ने दुनिया का सबसे अनमोल रत्न खून के उस आखिरी कतरे को माना या जो देश की हिफाजत के लिए गिरता है संजीव के लिए प्रतिरोध और संघर्ष करनेवाली औरत ही दुनिया की सबसे हसीन औरत है।

**निष्कर्ष:**

आदिवासी लेखन विविधताओं से भरा हुआ है। मौखिक साहित्य कि समृध्द परंपरा का लाभ आदिवासी रचनाकारों को मिला है। आदिवासी साहित्य कि उस तरह कोई केंद्रीय विधा नहीं है। जिस तरह स्त्री साहित्य और दलित साहित्य कि आत्मकथात्मक लेखन है। कविता, कहानी उपन्यास, नाटक सभी प्रमुख विधाओं में आदिवासी जीवन समाज की प्रस्तुति की है।

**संदर्भ सूची :**

1. मेहरून्निसा परवेज 'मेरी बस्तर की कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
2. वंदना टेटे- आदिवासी साहित्य, परम्परा और प्रयोजन , प्रथम संस्करण
3. संजीव की कथा यात्रा –दुसरा पडाव वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली.
4. हिंदी साहित्य और साहित्यिक विमर्श : डॉ सुरेया शेख :